गुरु नानक – सबद १६

मंनै मारग ठाक न पाइ ॥

जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ३

मंनै मारग ठाक न पाइ ॥
मंनै पत सिउ परगट जाइ ॥
मंनै मग न चलै पंथ ॥
मंनै धरम सेती सनबंध ॥
ऐसा नाम निरंजन होइ ॥
जे को मंन जाणै मन कोइ ॥१४॥

सार: हदों और चुनौतियों से रुके बिना उन्हें अपनाना, स्वीकृति है। यह हमें चुनौतियों से ऊपर उठने और इनसे जीतने की शक्ति देती है, ताकि हम इनकी असलियत को स्वीकार कर सकें।

मंनै मारग ठाक न पाइ ॥
जो स्वीकृति को अपनाते हैं वह अपनी जीवन यात्रा के दौरान में आयी मुश्किलों पर विजय प्राप्त करते हैं।

मंनै पत सिउ परगट जाइ ॥
जो स्वीकृति को अपनाते हैं वह अंततः अपनी सक्षमता दर्शाते हैं।

मंनै मग न चलै पंथ ॥
जो स्वीकृति को अपनाते हैं वह किसी विशेष धार्मिक मार्ग का अनुसरण नहीं करते हैं।

मंनै धरम सेती सनबंध ॥
जो स्वीकृति को अपनाते हैं वह केवल नेकी से जुड़ते हैं।

ऐसा नाम निरंजन होइ ॥
ऐसे प्राणियों का अस्तित्व पवित्र है।

जे को मंन जाणै मन कोइ ॥१४॥

जो स्वीकृति का अभ्यास करते हैं वह अपनी स्थिति से अवगत रहते हैं। (१४)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि पूर्ण स्वीकृति रस्मी रिवायत, परंपराओं को रद्द करने और दुनयावी भलाई के लिए अस्वीकृत सामाजिक मानदंडों को स्वीकार करने की एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com